International Referred Research Journal, April, 2011. ISSN- 0974-2832 RNI-RAJBIL 2009/29954.VoL.III *ISSUE-27

शोध पत्र- जनसंचार

# हिन्दी भाषा का अन्तरराष्ट्रीय स्वरुप और पत्रकारिता

* डॉ. तुकाराम दौड

* माईन पुना द्वारा संचलित एम. आई. टी. जनसंवाद महाविद्यालय, लातूर

April, 2011

शोध सारांश :–

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट संचार का युग है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा का स्वरुप जनसंचार माध्यामों द्वारा व्यापक होने लगा है। पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी भाषा का पूरे विश्व मे प्रचार प्रसार हुआ है। आज भारतीय मूल के 1 करोड 20 लाख लोग विश्व के 132 देशों में निवास करते है । अंग्रेजी और चीनी भाषा के बाद अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व भाषाओं से हिन्दी भाषा को तिसरा स्थान है। विश्व के सभी देशों के पत्रकारिता को प्रभावीत करने का कार्य हिन्दी भाषा द्वारा किया जा रहा है । वैश्वीक भाषाओं के साथ हिन्दी को जुडने का कार्य भारतीय जनसंचार पत्र पत्रिकाएँ और रेडीओ टेलीविजन माध्यमो द्वारा किया जा रहा है। हिन्दी के विकास में बी. बी. सी. रेडीओ, सिलोन ब्रॉडकास्टींग, पी.टी.आई., यू.एन.आई. न्यूज एजेन्सी संस्थाओंने अविस्मरणीय योगदान दिया है और विश्व हिन्दी सम्मेलन, और अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों का योगदान उल्लेखनिय है। और विदेशों तक हिन्दी पत्र पत्रिकाओं का विकास हुआ है। विश्व मे अब तक अनेक क्रांतीयॉ हो चुकी है।

पहली कृषी क्रांती दुसरी औधोगीक क्रांती और तिसरी सूचना प्रौद्योगिकी क्रांती अर्थात वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। इंटरनेट विश्व सूचना मार्गपर हिन्दी भाषा अभी उंगली पकडकर चलना सीख रही है। अनेक पत्र पत्रिकाएँ इन दिनों इंटरनेट मास मिडिया पर उपलब्ध है। इंटरनेट सेवा के माध्यम से कोई भी व्यक्ती घर बैठे इंटरनेट पर हिन्दी भाषाई अखबार, किताबे, पत्र पत्रिकाएँ इत्यादी पढ सकते है। कहानी कविताएँ, रचनाएँ, उपन्यास, आलोचना तथा सहित्य की अन्य सुविधाएँ वेबसाईट पर अपलब्ध है अनिवासी भारतीय लोग हिन्दी पत्र पत्रिकाएँ पढ सकते है। और हिन्दी साहित्यीक लेखको के निबंधो और लेखों का भी संकलन हिन्दी नेस्टकाम पर देखने को मिलता है। वेब ब्रॉडकॉस्टींग का हिन्दी चॅनलो द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा है। इसी के साथ हिन्दी साहित्य ब्लॉग के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार होने लगा है। हिन्दी साहित्यीक ब्लॉग द्वारा अपनी बात प्रस्तुत कर सकते है। दुनिया में करीब 10 हजार हिन्दी ब्लॉग है। ब्लॉग भौगोलिक सीमाओं से भी पूरी तरह आजाद है। हिन्दी भाषा का अन्तरराष्ट्रीय स्वरुप व्यापक बनाने में इंटरनेट संचार मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। -

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट का युग है। हिन्दी भाषा का अन्तरराष्ट्रीय स्वरुप व्यापक होने लगा है। हिन्दी भाषा की क्षमता की दृष्टि से देखे तो विश्व की किसी भी भाषा से वह अधिक सक्षम है। पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी भाषा का पूरे विश्व में प्रचार प्रसार हुआ है। वर्तमान परिवेश में पत्रकारिता के अभाव में मानव समाज की कल्पना नही की जा सकती है। "पत्रकारिता जन सेवा का सशक्तमाध्यम है।"[1] आज के वैज्ञानिक युग में इसका महत्त्व दिन प्रतीदिन और भी बढ गया है। "आज भारतीय मूल के 1 करोड 20 लाख लोग विश्व के 132 देशों में निवास करते है। अग्रेजी और चीनी के बाद विश्व की भाषाओं में हिन्दी को तिसरा स्थान प्राप्त है।"[2] पत्रकारिता सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार बडीमात्रा में करने लगी है। पत्रकारिता का क्षेत्र बेहद व्यापक है। भारत विश्व में सबसे बडा लोकतांत्रीक राष्ट्र है। विश्व के सभी राष्ट्रों को हिन्दी भाषा को समझना होगा। भूमंडलीकरण के नये दौर में नयी परिस्थितीओं में हिन्दी एक महत्त्वपूर्ण भाषा के रुप में उभर रही है। विश्व के सभी देशों के पत्रकारिता को प्रभावीत करने का कार्य हिन्दी भाषा द्वारा किया जा रहा है। विश्वभर में हिन्दी के भविष्य को लेकर कुछ आशाएँ जागृत हुई है। वैश्वीक स्तर पर हिन्दी भाषा महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। वैश्वीक भाषा के साथ जुडने की प्रवृत्तीने हिन्दी को व्यापकता दिखाई है। और आगे की वह व्यापकता अपना दायरा बढाती जायेगी। हिन्दी ने केवल ज्ञान की भाषा बनकर ही अपना दायित्त्व नही निभाया है। बल्कि वह वैश्वीक जन की भी भाषा बन रही है। इसमें पत्रकारिता से जुडे फिल्म, टेलीविजन, रेडीओ, समाचार पत्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

**अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा की स्थिती एवं स्वरूप :**

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी भाषा का स्वरुप वैश्वीक बन चुका है। इंटरनेट संचार मीडियाद्वारा हिन्दी ने राष्ट्रीयता की सीमा को तोडकर पूरे विश्व में हिन्दी पहुँच गयी है। हिन्दी भाषा के व्यापक जनाधार के कारण ही शायद आज दुनिया के सौ से अधिक विश्व के अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा पठन - पाठन किया जा रहा है। फिजी, मॉरीशस और पूर्व अफ्रिका, सूरीनाम, त्रिनिनाद, नेपाल, ब्रह्मदेश, जैसे देशों में उपनिवेशवाद के विरूद्ध हिन्दी भाषाओं ने मानवी चेतना जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया है।

"अब तक छः विश्व हिन्दी सम्मेलन क.मश 1995 में नागपूर (भारत)1986 में नई दिल्ली (भारत), 1976 और 1993 पोर्ट लुई (मॉरीशस) 1996 में पोर्ट स्पेन (त्रिनिदादऐंड टोबेगो) और 1999 में लंदन (यू. के.) में आयोजित किये गये"[3] संसार के सभी हिन्दी विद्वानों और हिन्दी प्रेमीयोंने इन सम्मेलन में भाग लेकर इन्हे सफल बनाया।"सन 1916 में लेडी स्मिथ नगर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन संपन्न हुआ।"[4] अमेरिका का महाद्वीप गयाना द्वीप है। यहाँ पर आरम्भ में भोजपूरी भाषा हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। "1975 में आयोजित प्रथम विश्व सममेलन के साथ ही हिन्दी प्रेमीओं का ध्यान इस तथ्य की ओर गया की हिन्दी संपूर्ण राष्ट्र की भाषा है।"[5] अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर हिन्दी भाषा के भविष्यको लेकर कुछ आशायें जागृत हुई। न्यूयॉर्क 2007 में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में भी हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में सातवी अधिकारीक भाषा के रुप में मान्यता दि जानी चाहिए। इस बात पर चर्चा की गयी है। सन 1958 में नाटो के सदस्यों ने एशियाई तथा आफ्रिका भाषाओं सम्बन्ध में एक विश्व सम्मेलन बुलाया था।

जिसमें हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में सबसे अधिक चर्चा हुई थी। आज विदेशों के आचार्य एवं विद्वानों की हिन्दी भाषा के प्रति यह अवधारणा बनी हुई है की भारतीय इतिहास, संस्कृती और समाज को जानने के लिए हिन्दी भाषा का अध्ययन शुरु किया है। और विश्व बाजार में बहुराष्ट्रीय कम्पनीओं के व्यापार एवं विज्ञापनों के माध्यमसे हिन्दी एक प्रबल भाषा के रुप में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है। हिन्दी के मायक्रोसॉफ्टवेअर में हिन्दी के अनेक प्रकार के पॅकेज उपलब्ध है। जिसके कारण इंटरनेटपर भी हिन्दी भाषा छा गयी है। न्यूयॉर्क में आयोजित 2007 के आठवे विश्व सम्मेलन तथा पूर्व के सात विश्व हिन्दी सम्मेलन इस बात के साक्षी है की, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा एक अपना सर्व सामान्य धरातल निर्मीत कर चुकी है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा का भविष्य दैदिप्यमान है। विश्व हिन्दी सम्मेलनों के निम्नलिखित उद्देश इस प्रकार के है। 1) अत्नरराष्ट्रीय भाषा के रुप में हिन्दी की भूमिका उजागर करना। 2) विभीन्न देशों में विदेशी भाषा के रुप में हिन्दी भाषा की स्थिती का आकलन करना और सुधार लाने के तौर तरीकों का सुझाव देना। 3) हिन्दी भाषा और साहित्य में विदेशी विद्वानों के योगदान को मान्यता प्रदान करना। 4) प्रवासी भारतीय के बीच अभिव्यक्ती के माध्यम के रुप में हिन्दी भाषा का विकास करना। 5) विज्ञान और प्रौद्योगिकी आर्थिक विकास और संचार के क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग को बढावा देना। और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी का विकास करना। इन उद्देशों को सामने रखकर अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर विश्व हिन्दी सम्मेलन सफल बनाए गये है। प्रस्तुत अध्ययन में हिन्दी भाषा का अन्तरराष्ट्रीय स्वरुप और पत्रकारिता विश्व की प्रधान भाषाओं में से एक हि नही बल्की दुनिया के सबसे बडे गणतंत्र की राष्ट्र भाषा भी है। इसे अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर हिन्दी भषा के महत्त्व को देखकर विकास के पथपर और आगे बढना चाहिए। 21 वी सदी में हिन्दी भाषा पूर्वीकरण और पश्चिमीकरण के मध्य एक भावनात्मक सेतू साबीत होगी।

**विश्वभर के विश्व विद्यालयों में हिन्दी भाषा और पत्रिकाएँ :**

दुनिया के कई विश्व विद्यालयों में हिन्दी भाषा का पठन - पाठन विश्व विद्यालय और अन्य स्तरोंपर हो रहा है। भारत की एकमात्र भाषा हिन्दी है। " दुनिया के करीब 120 विश्व विद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन - अध्यापन हो रहा है।"[6] दुनियाँ के पचास देश ऐसे है जहाँ पर भारत वंशी लोग हिन्दी को व्यापार संप्रेषण, सांस्कृतिक संप्रेषण आदी के लिए प्रयोग कर रहे है। "हिन्दी आज केवल भारत की राज भाषा और राष्ट्रभाषा ही नही अपितु एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में अपना स्थान बना वुकी है।"[7]

फ्रान्स, इटली, स्विडन, ऑस्ट्रिया, नॉर्वे, डेनमार्क, पोलंड, हॉलंड, झेकगणराज्य, जर्मनी, रूमानिया, बल्गेरीया, हंगेरी राष्ट्र भी हिन्दी के सन्दर्भ में पीछे नही है। इस्लामी राष्ट्रो में हिन्दी भाषा लोकप्रियता के शिखर पर है। तूर्कस्तान, इराक, मिस्त्र, लिबीया, संयुक्तअरबअमिरात, तथा दुबई में भी हिन्दी में अपना स्थान जमा लिया है। रूस से हर वर्ष अनेक छात्र हिन्दी अध्ययन हेतू भारत आते है। बल्गेरीया में भारत विद्या के प्रति अभिरूची है। चिन के विश्व विद्यालयों में भी हिन्दी भाषा के अध्ययन की व्यवस्था है। फिजी में देश के तीन लाख से अधिक लोगों की हिन्दी भाषा है। दक्षिण अमेरीका के एक छोटे देश का नाम सुरीनाम है। इस देश में आधे के आधे भारतीय है। जिनकी मातृभाषा हिन्दी है। "सुरीनाम हिन्दी की भाँति ही हॉलंड की हिन्दी है। नाताल इस दक्षिण अफ्रिका के राज्य में हिन्दी मातृभाषी रहते है।"[8] वेस्ट इंडीज के ट्रिनीदाद और टोबॅगो द्वीपों में भी हिन्दी भाषी भारतीय रहते है। इनकी संख्या लगभग पंद्रह लाख है। कोरिया के हानकूक विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग है। चीन में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 35 करोड है। सन 1959 में हिन्दी चीनी शब्दकोश बनाया गया है। हमारे राष्ट्र का घनिष्ट मित्र रुस देश है। डॉ. बरन्नीकोव ने रामचरितमानस का रुसी भाषा में पद्यानुवाद किया है। डॉ. डेल्टेजेनी हिन्दी के अध्यापक के रुप में प्रसिद्ध है। इन्होने हिन्दी हंगेरीयन शब्द कोश तैयार किया है। पूरे विश्व में हिन्दी भाषा प्रचार - प्रसार हो रहा है। वर्धा में स्थित म. गांधी अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा 'बहुवचन' अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती है। और पुस्तकवार्ता पत्रिका भी प्रकाशित की जाती है। विश्व में हिन्दी भाषा का प्रचार - प्रसार करना एवं लोगों को प्रेरीत करना यह इस विश्व विद्यालय का उद्देश है। मॉरीशस विश्वविद्यालय में भी हिन्दी भाषा का प्रचार - प्रसार शोध पत्रिकाओं द्वारा किया जा रहा है। आज हम देश के विश्वविद्यालयों एवं अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा की शोध पत्रिकाए एवं हाऊस जर्नल भी पढ सकते है।

इनमें समिक्षा नमूना इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्तविश्वविद्यालय दिल्ली, हिन्दी विद्यापीठ पत्रिका (विद्यापीठ देवधरा), गुरुनानक देव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की पत्रिका (पंजाब), बनारस विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश भारतीय जनसंचार संस्थान की संचार माध्यम हिन्दी पत्रिका (नई दिल्ली), शोध पत्रिका राजस्थान विद्यापीठ साहित्य संस्थान, संचार पत्रिका लखनौ विश्वविद्यालय लखनौ, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दी पत्रिका प्रकाशित की जाती है। भारत के विश्वविद्यालयों में हिन्दी पत्रिका एवं त्रैमासिक पत्रिका और शोध पत्रिकाए वेबसाईट पर उपलब्ध है। आज पुरे देश में और बाहरी दुनिया के विश्वविद्यालयों में हिन्दी पत्रिकाएँ फल फूल रही है। निश्चित रुप से हिन्दी भाषा विश्वभाषा बन चुकी है। पाकिस्तान में तारिक रहेमान आझम विश्वविद्यालय में इन्टरनॅशनल जर्नल ऑफ पंजाब स्टडीज प्रकाशित किया जाता है। और टोकिओ विश्वविद्यालय पत्रिका हिन्दी भाषा में प्रकाशित की जाती है। केम्ब्रीज विश्वविद्यालय, वॉशिग्टन विश्वविद्यालय, ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय, व्हर्जीनीया कॉमन वेल्थ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में हिन्दी पत्रिकाए प्रकाशित की जा रही है। विश्वस्तर पर विश्वविद्यालयोंने हिन्दी भाषा में अपना सम्बन्ध जोड लिया है। और भारत के विश्वविद्यालयों में हिन्दी पत्रपत्रिकाओं का विकास होने लगा है। और विदेशों में हिन्दी पत्रकारिताने ग्लोबल रुप धारण किया है। सचमुच हिन्दी विश्वभाषा बन चुकी है।

**विदेशों में हिन्दी पत्रिकाएँ :**

आज हम देश विदेश की हिन्दी पत्रिकाएँ घर बैठे पढ सकते है। वेबसाईट ने अबतक अनेक लघुपत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तरपर लाकर खडा किया है। इसके माध्यम से इंटरनेट पत्रकारिता का उदय हुआ। "The internet journalism is rooted and sustained by the standard of world wide web (www)"[9] इंटरनेट का एक वर्ल्ड वाईड वेब है। आज देश विदेश के समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं ने वेब पृष्ठोंपर अपनी जानकारी देना शुरु किया है। जैसे इनमें हिन्दी कॉम यूके यह युनायटेड किंगडम से संचलित एक तिमाही साहित्यीक पत्रिका है। और भारत दर्शन न्यूझिलंड से प्रकाशित हिन्दी साहित्यीक पत्रिका है। वर्गथ कॉम, लिट्रेट वर्ल्ड, कल्याण मानसकृति, इंडिया वर्ल्ड, वुमेन इन्फोलिन आदी सर्फिंगऊक्त वेब साईटसे कि जा सकती है। हिन्दी भाषा की राष्ट्रीय अस्मिता जागृत करने के लिए। पत्रपत्रिकाओं की आवश्यकता है। सुचना प्रौद्योगिकी को जोडने का माध्यम हिन्दी है। हिन्दी भाषा द्वारा मुद्रित माध्यमों का समाजिकरण हो रहा है। जॉन्सन ने लिखा है की, "सामाजिक

परिवर्तन के लोगों के कार्य करने की पद्धतीयों में रुपांतरण कहा जा सकता है।"[10] उपरोक्त परिभाषाओं, हिन्दी पत्रपत्रिकाओं द्वारा स्वातंत्र्योत्तर काल में सामाजिक चेतना जागृत करने का ढाँचा तथा सामाजिक मान्यताएँ आदी प्रत्येक कार्य में हिन्दी भाषा पत्रिकाओंकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। हिन्दी भाषा के विकास में 19वी सदी की हिन्दी पत्रकारिता का उगमकाल माना जाता है। कानपूर निवासी पं. किशोर शुक्ल हिन्दी पत्रकरिता के पितामह माने जाते है। स्वाधिनता संग्राम में हिन्दी भाषी पत्रकारिता का योगदान लक्षणीय रहा है। स्वतंत्रता के बाद भारत में पत्र पत्रिकाओं का बडी मात्रा में उदय हुआ। आधुनिक युग में पत्रपत्रिकाओं की चुनौती ग्लोबल है। इंटरनेट आधुनिक जनसंचार प्रणालीका हिन्दी भाषी लोग उपयोग कर रहे है। आधुनिक जनसंचार व्यवस्थाओं के माध्यमों से पत्रपत्रिकाओं ने दूरस्थ स्थानोंपर रहने वाले हिन्दी निवासीओं को संपूर्ण विश्व से जोड दिया है। इ कॅलिबर कॉम यह अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी संस्था की साईट है। "यू. के. से पूरवाई और अमरदीप, चेतक, प्रवासीनी, हिन्दी आदि, अमेरिका से विश्व, विश्व विवेक, सौरभ, भारती, नॉर्वे से स्पाईल दर्पण एवं शांतिदूत, फिजीसे लहर व संस्कृती, मॉरिशस से आक्रोश, मुक्ता, जनवाणी, रिमझीम सुरीनाम से सेतूबंध,सरस्वती, भारतोदय, कॅनडा से हिन्दी चेतना और ऑस्ट्रेलियासे चेतना आदी पत्रपत्रिकाएँ निरंतर प्रकाशित हो रही है।"[11]

ये पत्रपत्रिकाएँ देशविदेश के साहित्यकारों को संयुक्त मंच देती है। अब हिन्दी में सायबर पत्रकारिता का भी उदय हुआ है। विश्व बँक की अधिकारीक वेबसाईट हिन्दी है। मॉरिशस से कई हिन्दी पत्रपत्रिकाएँ प्रकाशित होती है। जैसे की हिन्दुस्थानी आर्योदय, आर्यवीर, आर्यपत्रिका, बालसखा, अनुराग, सनातन आदी। अमरिका में आवाज, आग्रा न्यूज, इराण समाचार, खास खबर, जर्मन समाचार (जर्मन दूतावास दिल्ली), अमरिकी समाचार (अमरिकी दूतावास), प्रभासाक्षी, लोकवार्ता, कॅनडा का हिन्दी समाचार, स्पैन पब्लिक अफेअर्स अनुभाग, अमेरिकन सेन्टर, अमरिकी दूतावास, बी. बी. सी. हिन्दी ऑनलाईन पत्रिका, सोविएत संघ समाचार (रशियन दूतावास) डियूशवेल्ल हिन्दी (जर्मन रेडीओद्वारा), विदेशी एवं देशी पत्रिकाएँ आदी प्रमुख है। विदेशों से भी हिन्दी पत्रिकाएँ प्रचुरमात्रा में प्रकाशित हो रहे है। यू. के. में हिन्दी पत्रकारिता का विकास हुआ है। वहॉ ज्योतिषाचार्य पं. विनोद दुबेजीने ज्योतिष का सूर्य यह हिन्दी पत्रिका शुरु की है। वैश्विक स्तरपर इंटरनेट द्वारा हिन्दी पत्रकारिता का विकास होने लगा है। "ब्रिटीश उच्चआयोग की पत्रिका ब्रिटीश समिक्षा हिन्दी निकलती है। आज समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं की दुनियामें हिन्दी सबसे आधुनिक मुनाफे की भाषा बन गयी है। अनुमान है कुल विज्ञापनों का 75% माध्यम हिन्दी से है।"[12]

हिन्दी प्रचार - प्रसार में अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर आधुनिक जनसंचार माध्यमोंकी बहुत बडी भूमिका है। वर्तमान युग में हिन्दी का प्रयोग वैश्विक स्तरपर हो रहा है। हिन्दी भाषा के विकास में न्यूज एजन्सी पत्रकारिता में बहुत बडी भूमिका निभाई है। प्रेस स्ट्रस्ट ऑफ इंडिया पहलेसे एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इंडिया के नाम से जाना जाता था। जिस पर ब्रिटीश न्यूज एजेन्सी का स्वामित्त्व था। फरवरी सन 1949 ई में भारत के प्रथम सूचना एवं प्रसारण मंत्री सरदार पटेल की सहाय्यता से स्पष्टीकरण हुआ। "पी. टी. आई. अंग्रेजी और हिन्दी में अपनी समाचार सेवाएँ दे रही है। भाषा यह एजेन्सी की हिन्दी समाचार सेवा है।"[13] पी. टी. आई. ने 18 अप्रैल 1986 को हिन्दी सेवा प्रारम्भ करके हिन्दी पत्रकारिताके उज्ज्वल भविष्य की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम बढाया है। "हिन्दी भाषा में फिचर एवं समाचार सेवाएँ प्रारम्भ की। हिन्दी प्रदेशों में इस संस्था के करीब 105 कार्यालय है। और करीब 225 पत्र इसकी सेवा का लाभ उठा रहे है।"[14] हिन्दी भाषा में फिचर सेवाएँ देनेका कार्य यु. एन. आई. करती है। "समाचार भारती 2 अक्तुबर को स्थापीत समाचार भारती भारतीय भाषाओं की दुसरी बडी समिती है।"[15] हिन्दी समाचार समिती विदेशी समाचार सेवाओं के लिए इस समिती ने समाचार सेवाओं के लिए इस समितीने तास तथा तिसरी दुनियाँ से संधी कर रखी है। हिन्दी भाषा के विकास में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर न्यूज एजेन्सी संस्थाओं का योगदान अविस्मरणीय है। पी. टी. आई., यु. एन. आय. इस न्यूज एजेन्सी संस्थाओंने ई-हिन्दी न्यूज सेवाओं का प्रारम्भ किया है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा का प्रचार - प्रसार हो रहा है।

**वैश्विक मास मीडिया और हिन्दी भाषा का अन्तरराष्ट्रीय स्वरूप :**

विश्व में अबतक अनेक क्रांतियॉ हो चुकी है। पहली कृषी क्रांती, दुसरी औद्योगिक क्रांती, और तिसरी सूचना और प्रौद्योगिकी क्रांती अर्थात वर्तमान युग सूचना और प्रौद्योगिकी का युग है। व्यक्ती, समाज या राष्ट्र को जोडनेका काम मास मीडिया ने किया है। हिन्दी भाषा प्रयोग रेडिओ और टेलिव्हीजन मीडिया ने शुरु किया है। अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर इलेक्ट्रॉनिक मीडियाने भी हिन्दी भाषा का प्रसारण प्रारम्भ किया है। "सन 1991 में हाँगकाँग से भारत में स्टार टी. व्ही. के चार चॅनल शुरू हुए।"[16] नव्वे के दशक में इराक - कुवेत का बी. बी. सी. हिन्दी सेवा और सी. एन. एन. ने सीधा प्रसारण किया। और सीधे प्रसारण की शैली को अन्तरराष्ट्रीय रूप प्रदान किया। टेलिव्हीजन मीडिया और रेडीओ मीडिया में हिन्दी भाषा में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसारण शुरु किये गये। भारतीय दूरदर्शन और भारतीय रेडीओ (आकाशवाणी) ने हिन्दी भाषा में प्रसारण को प्राथमिकता दि है। हिन्दी भाषा के विकास में दूरदर्शन और आकाशवाणी मास मीडिया का योगदान लक्षणीय है। विदेशी मीडिया में अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर हिन्दी भाषा के विकास में बी. बी. सी. सिलोन ब्रॉडकास्टिंग, जर्मन रेडीओ, जपान रेडीओ, व्हाईस ऑफ अमेरिका आदी मास मीडियाओं ने हिन्दी को बढावा दिया है। "बी. बी. सी. की यह सेवा 1940 में भारत की स्वतंत्रता के धुराविरोधी विन्स्टन चर्चिल के प्रधान मंत्रीत्त्व काल में शुरु हुई थी। और जल्द ही हिन्दी श्रोताओं में लोकप्रियता और विश्वसनियता हो गयी।"[17] यह श्रोता निश्चित समय पर बी. बी. सी. का हिन्दी प्रसारण सुनता था वर्ष के 70 जीवन में हिन्दी बी. बी. सी. सेवा ने अभूतपूर्व ख्याती अर्जीत की। बांग्लादेश मुक्ती अभियान पंजाब का संकट (ऑपरेशन ब्लू स्टार), भोपाल गॅस त्रासदी, भिंडरवाले प्रकरण से लेकर इंदिरा गांधी हत्या तक बी. बी. सी. ने हिन्दी सेवा में श्रोताओं को बांध रखा था। बी. बी. सी. हिन्दी सेवा से हिन्दी साहित्यकार एवं पत्रकार जुडे हुए थे। विश्व और भारतीय प्रसारण सेवा के इतिहास में बी. बी. सी. हिन्दी सेवा का अविस्मरणीय योगदान है। बी. बी. सी. रेडीओ, भारतीय आकाशवाणी और दूरदर्शनने अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर साहित्यकार पत्रकारोंका हिन्दी भाषा के विकास में योगदान अविस्मरणीय है।

**इंटरनेट विश्व संचार मीडिया और हिन्दी पत्रपत्रिकाएँ :**

इंटरनेट विश्वसुचना मार्गपर हिन्दी भाषा अभि उंगली पकडकर चलना सिख रही है। अनेक पत्रपत्रिकाएँ इन दिनों इंटरनेट मास मीडियापर उपलब्ध है। "इंटरनेट सेवा के प्रसार से कोई भी व्यक्ति घर बैठे इंटरनेट पर अखबार, किताबे, पत्रिका इ. पढ सकता है।"[18] दूरदेश के लोगों का पत्र कुछ ही सेकंड में प्राप्त हो सकता है। एवं तरह तरह से मनोरंजन आदी भी

प्राप्त हो सकता है। इन अखबारों को उनके ब्रॉड शीट कागज पर छपे रूप में देखने पडने से एकदम अलग बात है। पत्रपत्रिकाएँ अपनी अपनी वेबसाईट रखती है। हिन्दुस्थान के साथ वेब दुनिया, वॉशिग्टन पोस्ट को भी पढा जा रहा है। मन चाहे हिस्सों को डाउॅनलोड यानि कागजपर उतारा जा सकता है। कहानी, कविता, उपन्यास, आलोचना तथा साहित्य की अन्य विधाए वेबसाईट पर उपलब्ध है। "वेबसाईट वर्ल्ड कॉम ने पुरा एक वर्ष हंस पत्रिकाओं को प्रकाशित कर नया किर्तीमान स्थापित किया।"[19] इसीप्रकार अभिव्यक्ती और अनुभूती क्रमशः गद्य और पद्य पर आधारित हिन्दी भाषा का साहित्य दो सर्वोत्तम साईट्स है। हंस पत्रिका की ये वेबसाईट अमेरिका एवं विश्व में रहनेवाले हिन्दी भाषीक लोग देखते है। अनिवासी भारतीय हिन्दी पत्रपत्रिकाएँ पढ सकते है। हिन्दी पत्रिकाएँ वेबसाईटपर उपलब्ध है।

अमर उजाला, दै. भास्कर, दै. जागरण, नई दुनिया, राजस्थान पत्रिका, प्रभात खबर, हिन्दी मिलाफ, नवभारत, जबलपूर एक्सप्रेस, लोकमत समाचार, देशदूत, सीमासंदेश, पंजाब केसरी, देशबंधू, नवभारत टाइम्स, दै. हिन्दुस्थान, राष्ट्रीय सहारा, हरिभूमी, तहेलका हिन्दी, वीरअर्जुन, वेबदुनिया इन पत्रिकाओं को वेबसाईट्स पर देखा जा सकता है। साहित्यीक पत्रिकाओं में तद्भव, अनुभूती, इंडिया टुडे, कल्याण, आऊटलुक, क्रॉनिकल, भारत दर्शन, सृजनगाथा, हंस, समीक्षा और मूल्यांकन, आदि पत्रिकाओं के साथ सर्फिंग किया जा सकता है। हिन्दी साहित्यीक, लेखकों के निबंधों और लेखोंका भी संकलन हिन्दी नेस्ट कॉम पर देखनेको मिलता है। भारत में वेब टी. व्ही. और वेब रेडीओ का प्रसारण सूचना प्रसारण, सूचना प्रौद्योगिकी तकनिकी के द्वारा होने लगा है।

वेब समाचार पर पत्रिकाएँ और वेब टेलिव्हिजन और वेब रेडीओ का प्रसारण सुन सकते है। प्रसार भारती ब्रॉडकास्टींग निगमने भारतीय आकाशवाणी और दूरदर्शन की वेब कॉस्टींग सूचना तकनीकी का उपयोग शुरु किया है। इंटरनेट के सूचना महामार्ग पर हिन्दी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने वेब ब्रॉडकास्टींग हिन्दी भाषा में लँगवेज सॉफ्टवेअर और यु. ट्युब सॉफ्टवेअर के रूप में विकसित किया है। बी. बी. सी., प्रसार भारती आज तक झी ईनाडू टीव्ही, इंडीया टीव्ही, सहारा समय, एन. डी. टीव्ही., सन टीव्ही, सोनी टीव्ही, आय. बी. एन. - 7 सी. एन. बी. सी. आवाज, स्टारप्लस, स्टार वन, सब टीव्ही, खोज इंडिया, रफ्तार न्यूज चॅनल, प्रेस टी. व्ही., प्रयाग टी. व्ही., ओम टी. व्ही., आस्था टी. व्ही., संस्कार टी. व्ही., सत्संग, झी जागरण, पीस टी. व्ही., धर्म टी. व्ही. आदी चॅनलों में हिन्दी भाषा में वेब चॅनलों का प्रारम्भ किया है। कई वेब चॅनलों ने नई सूचना तकनिकी का उपयोग किया है। ऑन लाईन पत्रपत्रिकाओं के साथ इंटरनेट टी. व्ही., इंटरनेट रेडीओ का विदेशों में हिन्दी भाषी लोग लाभ लेंगे। हिन्दीसाहित्य में ब्लॉग के माध्यम से हिन्दी भाषा का प्रसार - प्रचार किया जा रहा है। ब्लॉग के बारे मे डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल कहते है की, "ब्लॉग अंग्रेजी के दो शब्दों वेब और लॉग से मिलकर बना। एक शब्द है। यानि एक ऐसी डायरी जिसे वेब पर लिखा गया है।"[20] वेब यह लॉग का संक्षिप्त रूप है। एक ऐसी वेबसाईट का नाम है। जिसे आम तौर पर व्यक्तिगत रूप से संचलित किया जा सकता है। ब्लॉग के द्वारा अपनी बातचित कर सकते है, दुनिया में करीब दस हजार हिन्दी ब्लॉग है। इसमें हिन्दी कविताएँ उपन्यास रचनाएँ, शायरी कविता, कथाए, ब्लॉग में प्रस्तुत कि जाती है। समाचार पत्र एवं इलेक्ट्रॉनिक मास मीडिया ने भी ब्लॉग शुरू किए है। ब्लॉग भौगोलिक सीमाओंसे भी पुरीतरह आझाद है। भारतीय भाषा में इंटरनेट संचार मीडिया पर ब्लॉगींग जर्नालिझम का उदय हो चुका है। यह सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा ब्लॉग अभिव्यक्ती का नया अविष्कार है। हिन्दी भाषा के विकास में अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर ब्लॉग एक इंटरनेट मीडिया का हिस्सा बन चुका है। विश्व की नविनतम जानकारीके लिए यह उपयुक्त होगा। और हिन्दी भाषा का अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर विकास होगा।

**निष्कर्ष :**

अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर हिन्दी भाषा के विकास में अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर हिन्दी भाषा के विकास में अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन और विश्वविद्यालयो एवं पत्रपत्रिकाओं का योगदान अविस्मरणीय है। हिन्दी पत्रकारिता के द्वारा राष्ट्र वाणी का रूप अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर अलग अलग राष्ट्रों में हिन्दी भाषा का विकास हो रहा है। हिन्दी को अन्तरराष्ट्रीय एवं विश्वभाषा की अस्मिता जागृत करने के लिए प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने लक्षणिय योगदान दिया है। इंटरनेट ऑनलाईन वेब टीवी, वेब रेडीओ और वेबपत्रपत्रिकाओं द्वारा हिन्दी भाषा को जोडने का कार्य आधूनिक जनसंचार मीडिया ने किया है। विदेशों में हिन्दी भाषी पत्रपत्रिकाओं का भी प्रभाव बढेगा। और हिन्दी भाषा ग्लोबल बनेगी। अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर हिन्दी भाषा का स्वरूप जनसंचार माध्यमोंद्वारा व्यापक होने लगा है। पत्रकरिता के माध्यम से हिन्दी भाषा का पूरे विश्व में प्रचार - प्रसार हुआ है। अँग्रेजी और चीनी भाषा के वाद अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व भाषाओं में हिन्दी भाषा को तिसरा स्थान है। सचमुच अन्तरराष्ट्रीय स्तर हिन्दी भाषा वैश्वीक रूप धारण कर चुकी है।

## संदर्भ ग्रंथ

1) प्रियंका वाधवा - पत्रकारिता के विविधरूप एवं सिद्धांत,रजत प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2008 पृ.1 2) स्मरणिका संवादिका राष्ट्रीय संगोष्ठी 19, 20 डिसेम्वर 2009, शारदाबाई पवार महिला महाविद्यालय, बारामती पुणे, पृ. 48 3) www.vishvahindisamelan.nic.in 2003, 4) स्मरणिका संवादिका - राष्ट्रीय संगोष्ठी, 19,20 डिसंवर 2009, शारदाबाई पवार महिला महाविद्यालय - बारामती, पुणे पृ. 49 5) वही पृ. 51 6) वही पृ. 54 7) वही पृ. 49 8) वही पृ. 49 9) जगदीश चक्रवर्ती - नेटमीडिया ॲन्ड दि मास मीडिया कम्युनिकेशन, ऑर्थर प्रेस नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2004, पृ. 76 10) डॉ. अनिल पुरोहित - विज्ञापन जनसंचार माध्यम और सामाजिक परिवर्तन 11) स्मरणिका संवादिका - राष्ट्रीय संगोष्ठी 19, 20 दिसम्वर 2009 12) स्मरणिका राष्ट्रीय संगोष्ठी - केशरबाई लाहोटी कॉलेज अमरावती 12 - 13 अकतूवर 2008 पृ-11, 13)वार्षिक संदर्भ ग्रंथ गवेषणा संदर्भ और भाषा प्रभाग, भारत 2005, पृ. 565, 14) वही पृ. - 565, 15) देश और दुनिया समाचार भारती वार्षिक रिपोर्ट पृ. - 142, 16) स्मरणिका संवाहिका - राष्ट्रीय संगोष्ठी - शारदाबाई पवार महिला महाविद्यालय 1920 दिसम्वर 2009 बारामती पुणे पृ- 38 17) वी बी सी हिन्दी सेवा, दै लोकमत समाचार, औरंगाबाद, 16 फरवरी 2011, पृ -6, 18) प्रियंका वाघवा पत्रकारिता के विविध रुप एवं सिद्धांत, रजत प्रकाशन प्रथम संरकारण 2008, पृ. 349,19)डॉ.सुजाता वर्मा-पत्रकारिता-प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि, आशीष प्रकाशन कानपूर, दितीय संस्कारण 2006, पृ.169 20) डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल - संचार का नया आयाम ब्लॉग यानी चिट्ठा, संपादक डॉ संजीव भानावत - इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, पृ.-371,